प्रश्न-1. "व्यक्तिगत नैतिकता और सामाजिक अपेक्षाओं के बीच की खाई को पाटने में नैतिक मूल्यों की भूमिका पर चर्चा करें।" **(8 अंक)**

उत्तरः

भूमिकाः

नैतिक मूल्य एक ऐसा माध्यम है, जो न्याय, समानुभूति और जिम्मेदारी जैसे साझा सिद्धांतों के जरिए व्यक्तिगत नैतिकता को सामाजिक अपेक्षाओं से जोड़ता है। जैसा कि रूसो ने अपने 'सामाजिक अनुबंध सिद्धांत' में बताया कि किस प्रकार व्यक्ति सद्भाव सुनिश्चित करने के लिए स्वेच्छा से अपनी नैतिकता को सामाजिक आवश्यकताओं के साथ संरेखित करते हैं।

नैतिक मूल्यों की प्रमुख भूमिकाः

- **न्यायः** यह निष्पक्षता सुनिश्चित करता है और व्यक्तिगत विश्वासों को सामाजिक मानदंडों के साथ संतुलित करता है। (उदाहरणः वंचित वर्गों के लिए आरक्षण जैसे सकारात्मक कदम और इसे प्रतिभातंत्र या मेरिटोक्रेसी के साथ संतुलित करना।)
- **सत्यनिष्ठाः** जवाबदेही को बढ़ावा देकर सामूहिक कल्याण के लिए पारदर्शिता सुनिश्चित करती है। (उदाहरणः एक सिविल सेवक रिश्वत को नकारते हुए सार्वजनिक कल्याण परियोजनाओं के लिए सही धन आवंटन सुनिश्चित करता है।)
- **समानुभूतिः** व्यक्तिगत इच्छाओं और सामुदायिक आवश्यकताओं के बीच संघर्ष को कम करती है। (उदाहरणः श्रमिकों के मानसिक स्वास्थ्य के लिए उत्पादन घंटे कम करना।)
- **सामंजस्यः** विविध समाजों में सह-अस्तित्व को प्रोत्साहित करता है।
- **करुणाः** आत्म-हित और सामूहिक कल्याण के बीच सेतु का कार्य करती है। (उदाहरणः डॉक्टरों का पिछड़े क्षेत्रों में सेवा देना।)
- **सम्मानः** दूसरों के अधिकारों को मान्यता देकर सामाजिक एकता को मजबूत करता है।
- **समानताः** व्यक्तिगत क्रियाओं को निष्पक्षता के सामूहिक प्रयासों से जोड़ती है।

निष्कर्षः

- नैतिक मूल्य सहयोग और आपसी सम्मान को बढ़ावा देकर यह सुनिश्चित करते हैं कि व्यक्तिगत क्रियाएं सामाजिक कल्याण में योगदान दें।

प्रश्न-2. "मानव मूल्यों के संदर्भ में नैतिक सापेक्षवाद की अवधारणा को समझाएं। यह अवधारणा सार्वभौमिक नैतिक मानकों को सुनिश्चित करने में क्या चुनौतियां उत्पन्न कर सकती है?" (200 शब्द)

उत्तर:

भूमिका

नैतिक सापेक्षवाद यह मानता है कि नैतिक मूल्य विभिन्न संस्कृतियों, समाजों या व्यक्तियों के लिए सापेक्ष होते हैं और पूर्ण नहीं होते। यह बताता है कि क्या उचित है और क्या अनुचित, यह सांस्कृतिक संदर्भ या व्यक्तिगत मान्यताओं पर निर्भर करता है। (उदाहरण: कुछ संस्कृतियों में बहुविवाह स्वीकार्य हो सकता है, लेकिन अन्य में यह अनैतिक माना जाता है।)

मानव मूल्य और नैतिक सापेक्षवाद

- नैतिक सापेक्षवाद यह दर्शाता है कि न्याय, ईमानदारी और निष्पक्षता जैसे मानवीय मूल्य सार्वभौमिक रूप से लागू नहीं होते।
- ये मूल्य किसी समाज की ऐतिहासिक, धार्मिक और सामाजिक पृष्ठभूमि पर आधारित हो सकते हैं। (उदाहरण: अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता को पश्चिमी समाजों में मौलिक अधिकार माना जाता है, जबकि कुछ अधिनायकवादी शासन व्यवस्था वाले देशों में इस पर प्रतिबंध है।)

सार्वभौमिक नैतिक मानकों में चुनौतियां

- **सांस्कृतिक विविधता:** अलग-अलग समाजों में नैतिक मानकों के अंतर के कारण सार्वभौमिक मानदंड स्थापित करना कठिन होता है। (उदाहरण: बाल विवाह कुछ संस्कृतियों में स्वीकार्य है, जबकि मानवाधिकारों के उल्लंघन के रूप में इसकी निंदा भी की जाती है।)
- **वैश्विक सहयोग:** जब देश अपने सांस्कृतिक मूल्यों के आधार पर भेदभाव या मृत्युदंड जैसी प्रथाओं का समर्थन करते हैं, तो वैश्विक सहयोग कठिन हो जाता है।

निष्कर्ष

- हालांकि नैतिक सापेक्षवाद सांस्कृतिक विविधता को महत्व देता है, यह मानवाधिकारों और वैश्विक शासन के संदर्भ में सार्वभौमिक नैतिक मानकों को स्थापित करने में गंभीर चुनौतियां उत्पन्न करता है।

प्रश्न-3. "सिविल सेवाओं में निजी हितों और सार्वजनिक जिम्मेदारी के बीच संतुलन बनाने में नीतिशास्त्र की भूमिका पर चर्चा करें। ऐसे मामलों में नैतिक दुविधाओं को कैसे हल किया जा सकता है?" (200 शब्द)

उत्तर:

भूमिका:

सिविल सेवाओं में निजी हितों और सार्वजनिक जिम्मेदारी के बीच संतुलन बनाए रखना पारदर्शिता और सार्वजनिक विश्वास बनाए रखने के लिए आवश्यक है। नीतिशास्त्रीय मानक सिविल सेवकों को व्यक्तिगत लाभ के बजाय सामाजिक कल्याण को प्राथमिकता देने में मार्गदर्शन प्रदान करते हैं।

संतुलन बनाने में नीतिशास्त्र की भूमिका:

- सिविल सेवाओं में नीतिशास्त्र यह सुनिश्चित करता है कि सार्वजनिक कर्तव्य को निजी हितों पर प्राथमिकता दी जाए।
- उदाहरण: एक सिविल सेवक को यह सुनिश्चित करना चाहिए कि उनकी निजी व्यावसायिक गतिविधियाँ उसके व्यावसायिक कर्तव्यों के साथ हस्तक्षेप न करें।

नैतिक दुविधाएं:

- नैतिक दुविधाएं तब उत्पन्न होती हैं जब वित्तीय लाभ या पारिवारिक प्रतिबद्धताएं सार्वजनिक जिम्मेदारी के साथ संघर्ष करती हैं।
- उदाहरण: किसी परियोजना को मंजूरी देने का निर्णय जो उनके परिवार के व्यवसाय को लाभ पहुंचा सकता है, लेकिन सार्वजनिक हित के साथ मेल नहीं खाता।

समाधान के तरीके:

- पारदर्शिता, जवाबदेही और अपक्षपात के सिद्धांतों का पालन करना।
- संभावित हितों के टकराव का खुलासा करना और निर्णय लेने से अलग रहना।
- नैतिक समिति, आचार संहिता और व्हिसलब्लोअर संरक्षण जैसे तंत्र लागू करना।

निष्कर्ष:

- नीतिशास्त्र यह सुनिश्चित करता है कि निजी हित सार्वजनिक जिम्मेदारी पर हावी न हों। नीतिशास्त्रीय दिशा-निर्देशों का पालन करने से सिविल सेवकों को दुविधाओं का समाधान करने में मदद मिलती है।

Chronicle IAS

प्रश्न-4. लोक प्रशासन में सामाजिक उत्तरदायित्व और सत्यनिष्ठा को आकार देने में स्वामी विवेकानंद जैसे सुधारकों की भूमिका और उनकी नैतिक शिक्षाओं पर चर्चा करें। (125 शब्द)

उत्तर:

भूमिका:

स्वामी विवेकानंद की शिक्षाएं निस्वार्थता, सामाजिक जवाबदेही और सत्यनिष्ठा पर आधारित थीं, जो लोक प्रशासन में नैतिक मूल्यों को आकार देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। मानव सेवा के प्रति उनका आह्वान और व्यक्तियों को सशक्त बनाने का संदेश सार्वजनिक सेवा के मूल्यों से मेल खाता है।

1. **सामाजिक जवाबदेही:** स्वामी विवेकानंद ने शिक्षा, आध्यात्मिक विकास और सशक्तीकरण के माध्यम से समाज के उत्थान पर बल दिया। इस सिद्धांत को अपनाने वाले लोक प्रशासक हाशिए पर रहने वाले वर्गों के कल्याण और समावेशी विकास को प्राथमिकता देते हैं।
2. **सत्यनिष्ठा:** विवेकानंद की सत्यनिष्ठा और ईमानदारी की शिक्षा प्रशासनिक अधिकारियों को पारदर्शिता और नैतिक आचरण बनाए रखने के लिए प्रेरित करती है। उदाहरण के लिए, रिश्वत न लेना उनके नैतिक साहस का प्रतीक है।
3. **नेतृत्व और सशक्तीकरण:** उन्होंने मजबूत नेतृत्व और सशक्तीकरण पर बल दिया, जिसमें नेता समुदायों की सेवा करते हुए उदाहरण प्रस्तुत करें।
4. **समग्र विकास:** उन्होंने भौतिक प्रगति और आध्यात्मिक विकास में संतुलन बनाए रखने पर जोर दिया, जो लोक सेवकों को आर्थिक और सामाजिक कल्याण को बढ़ावा देने के लिए मार्गदर्शन देता है।
5. **सांस्कृतिक संवेदनशीलता:** उनकी शिक्षाएं विविधता और सामाजिक सद्भाव के प्रति सम्मान सिखाती हैं, जो विविध समुदायों के प्रबंधन के लिए आवश्यक है।
6. **नैतिक जिम्मेदारी:** विवेकानंद ने व्यक्तिगत उत्तरदायित्व और नैतिक निर्णय लेने पर जोर दिया, जिससे प्रशासक जनहित को व्यक्तिगत लाभ से ऊपर रख सकें।

निष्कर्ष

- स्वामी विवेकानंद की शिक्षाएं लोक सेवकों को निस्वार्थ सेवा और सत्यनिष्ठा को अपनाने के लिए प्रेरित करती हैं, जिससे नैतिक प्रशासन और सामाजिक कल्याण सुनिश्चित होता है।

ChronicleIAS

प्रश्न-5. केस स्टडी:

एक वरिष्ठ लोक प्रशासक, श्री शर्मा, एक बड़ी अवसंरचना परियोजना की निगरानी कर रहे हैं। निविदा प्रक्रिया के दौरान, उनका एक घनिष्ठ मित्र, जिसकी एक निर्माण कंपनी है, अनुबंध के लिए पात्र है। श्री शर्मा जानते हैं कि अनुबंध अपने मित्र को देने से हितों के टकराव की स्थिति उत्पन्न हो सकती है, लेकिन कंपनी प्रतिस्पर्धी मूल्य प्रदान करती है। श्री शर्मा व्यक्तिगत निष्ठा और सार्वजनिक विश्वास बनाए रखने के कर्तव्य के बीच द्वंद्व की स्थिति में हैं।

1. इस स्थिति में श्री शर्मा को किन नैतिक सिद्धांतों को प्राथमिकता देनी चाहिए?
2. श्री शर्मा निविदा प्रक्रिया में पारदर्शिता और जवाबदेही कैसे सुनिश्चित कर सकते हैं?
3. लोक प्रशासन में हितों के टकराव को रोकने के लिए क्या उपाय किए जा सकते हैं?

उत्तर:

भूमिका

यह केस स्टडी श्री शर्मा की एक दुविधा पर केंद्रित है, जहां वे एक निर्माण कंपनी के साथ संबंधों के कारण हितों के टकराव का सामना कर रहे हैं।

श्री शर्मा को निम्नलिखित नैतिक सिद्धांतों को प्राथमिकता देनी चाहिए:

- **सार्वजनिक विश्वास और सत्यनिष्ठा:** सार्वजनिक हितों को सर्वोपरि रखते हुए पारदर्शिता सुनिश्चित करना।
- **अपक्षपात:** यह सुनिश्चित करना कि व्यक्तिगत संबंध निविदा प्रक्रिया की निष्पक्षता को प्रभावित न करें।

पारदर्शिता और जवाबदेही सुनिश्चित करने के उपाय

- **प्रकटीकरण:** निर्माण कंपनी के साथ अपने संबंधों की जानकारी संबंधित अधिकारियों और नैतिक निकायों को देना।
- **पदत्याग:** संभावित पक्षपात से बचने के लिए अनुबंध से संबंधित निर्णयों से स्वयं को अलग करना।
- **दस्तावेजीकरण:** निविदा प्रक्रिया का स्पष्ट दस्तावेजीकरण करना, जिससे बोलियों का निष्पक्ष मूल्यांकन सुनिश्चित हो।
- **सार्वजनिक पहुंच:** निर्णय प्रक्रिया के रिकॉर्ड को सार्वजनिक रूप से उपलब्ध कराना।

हितों के टकराव को रोकने के उपाय

- **हितों के टकराव से संबंधित नीतियां:** अधिकारियों के लिए व्यक्तिगत या वित्तीय हितों का खुलासा करना अनिवार्य करना।
- **स्वतंत्र समीक्षा समितियां:** निविदा निर्णयों की निष्पक्ष समीक्षा के लिए स्वतंत्र समितियां गठित करना।
- **नैतिक प्रशिक्षण:** भविष्य में हितों के टकराव को रोकने के लिए लोक सेवकों को नियमित रूप से नैतिक आचरण का प्रशिक्षण देना।

Chronicle IAS